वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के संदर्भ में वसुधैव कुटुम्बकम् की प्रासंगिकता:

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का विचार आज के परस्पर जुड़े (Interconnected) विश्व के लिए एक आवश्यक समाधान प्रस्तुत करता है।

निम्लिखित बिंदुओं के अंतर्गत वैश्विक चुनौतियों (Global Challenges) का समाधान वसुधैव कुटुम्बकम् के विचार से किया जा सकता है (Solution through Vasudhaiva Kutumbakam)

१. युद्ध और संघर्ष (Conflict and War) :

यदि सभी राष्ट्र स्वयं को एक परिवार का सदस्य मानें, तो सीमा विवाद और सैन्य संघर्ष 'पारिवारिक झगड़े' बन जाते हैं, जिनका समाधान युद्ध के बजाय संवाद, सहिष्णुता और कूटनीति के माध्यम से किया जाता है। यह विश्व शांति का आधार है।

२. जलवायु परिवर्तन (Climate Change) :

यह विचार हमें सिखाता है कि हम न केवल मानव परिवार, बल्कि समस्त जीव-जंतु, पेड़-पौधे और प्रकृति को भी इस 'कुटुम्ब' का हिस्सा मानें। यह भावना पृथ्वी को माँ के समान महत्व देती है, जिससे पर्यावरण के प्रति संयुक्त जिम्मेदारी और टिकाऊ जीवन शैली (Sustainable Living) को बढ़ावा मिलता है।

३. आर्थिक असमानता (Economic Inequality) :

परिवार में कोई सदस्य भूखा नहीं रहता। इसी तरह, यह सिद्धांत गरीब और अमीर देशों के बीच की खाई को पाटने के लिए संसाधनों के न्यायसंगत वितरण और सामूहिक विकास पर जोर देता है। यह व्यक्तिगत लाभ के बजाय सर्वजन कल्याण की भावना को बढ़ाता है।

४. आतंकवाद और अलगाववाद (Terrorism and Separatism) :

यह विचारधारा 'हम बनाम वे' (Us vs. Them) की संकीर्ण मानसिकता को तोड़ती है। यह सिखाती है कि हमारी मूल पहचान मानवता है, न कि धर्म या राष्ट्र। इससे नफरत और भय पर आधारित विभाजनकारी ताकतों का सामना करने में मदद मिलती है।

५. महामारी प्रबंधन (Pandemic Management) :
COVID-19 जैसी वैश्विक आपदाओं में, यह सिद्धांत वैश्विक सहयोग की आवश्यकता को दर्शाता है। टीके और चिकित्सा संसाधनों को राष्ट्रीय हित की वस्तु न मानकर, परिवार के सभी सदस्यों की सुरक्षा के रूप में देखा जाना चाहिए।

संक्षेप में, यह भारतीय दर्शन हमें एक सहिष्णु, सहयोगी और एकजुट विश्व व्यवस्था बनाने का मार्ग दिखाता है।